THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO. MBB—1971—

216-116

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB – 11

MBB-1973-216
1. Film strip number

60
2. Source

SUBANDHUJĀTAKA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

X
6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

10 cm. x 34 cm.
9. Size

7
10. Lines to a page

10
11. Number of leaves in complete work

X
12. Missing leaves

X
13. Author and Date of composition (if given)

X
14. Number of Chapters

15. Remarks A story of the former life of Buddha.

May 10, 1973

अथ ब्राह्मप्रशंसादिकं कालकूटीयानिराय सत्यसाहस्यविद्य प्रजासूत्रत्व दर्शयति। सर्वथा प्रशस्तपाकाक्षा ४ सत्सीकृतद्विजक्रमा ता काणभक्षा मधीकृतिगुरी
ऽनांस्य वाङ्मिक॥ तत ब्राह्मणकुलस्य तत्रैव सूत्रागत ४ जेत्र सत्सूत्र्याकिज ४ अनि तत्र यत्र ता॥ ब्राह्म सर्वीस्कार्यास्तत्राधिकर्मनामप्रम॥ तत्र साधि
ऽस्मिन्नाम सत्कर्मयंतु प्रजत्व॥ ऽस्मिन्नेव स्थाधिकं ऽस्मिन्नाम्यनिष्ठ सत्तिप्रसिद्धि॥ ब्राह्मणे जीविकांगं सुखस्थ्यं तत्र सूदिश ब्राह्मस्थाधिप्रकर्थं कुर्वि
त्र वा धाल्यहिवरुकी वल्लत्यं यस्मिन्नाल्य या वेद्यथा षम्बाति॥ वृत्तवाहि वाङ्मिक सर्वं सर्वीकासाधुं हुधा ब्राह्मन्त्रकं मयीधाय ऽस्मिन्नाय यत्र ब्राह्मणा
स्वं॥ ऽस्मिन्नाहीदिगं ऽस्मिन्ना ब्राह्मणा नस्मिन्नाधिय ४ कृत्वर्तम्य कालत्व हामीस्कृत्वे व सङ्कुचीत॥ वार्त्ताजन्यसिद्धाभि रोद्धिर्थं ड अत्र चिंतनाय स्मिन्
विधीत्वा ऽधम्मस्मिन्दाभत्व ऽस्मिन्॥ ऽस्मिन्नाहीक्षाकाक्षिणा स्थानिविधिविनय क्रियाकृत्यानिरूपेत्र स्मिन्थाग मस्मिन्नाधीस्मिन्नि ४ एवं स्मिन्कर्मनष्टस्मिन्
ऽस्मिन्नाम्यसिद्धिसिद्धिमाना ब्राह्मणा नीस्मान्नीत्र ऽस्मिन्नाहीत्॥ ऽस्मिन्नविधम्मत्वर्त्ति कथमत्र ब्राह्मणाय॥ ऽस्मिन्नाम्नीस्मिन्नाहीत्र ४ स्त्रियाम्यधिय स्मिन्नाधि

यापि ज्ञस्त्वा यन्त्यगं यैर्ज्ञ ४ तस्त्वसत्या मतीत्य ष्ट दर्शयमात्मदृष्टिमा ॥ ॐ किमस्त्याथि नेऽक्षु स्त्वा थ्रजिस्तानस्त्यलिमाथ सकलायुस्त्वगालोस्त्वामित्यज्ञ मब्रवित्
दवस्त्वमागमोविद्व ४ स्तुविद्वाजीक्षिकाधिय: ॥ ४ वं कर्पतमिकं ठिनिरुद्धस्त्वत्रिनिरुद्धिमा ॥ ॐ किमस्त्वाथिनेऽक्षुस्त्वा नृपमित्रोत्तिनचित्र ४ ज्ञोत्वं वोलंस्त्वमात्मस्त्वा
यत्र मेवज्ञ ब्रवीत्वागस्त्वर्ज्ञ ४ तस्त्वयात्मस्त्वज्ञाक्षुरात्मं ग्रहमात्मेय ॥ यद्यर्थलिनिरुद्धस्त्वाग्रिमस्त्वत्रिनिरुद्धस्त्वात्मस्त्व तं ॐ किमात्मस्त्वमाथिनेऽक्षु स्त्वा नृपमित्रोत्तिनचित्र ४ ज्ञो
नाद्विज ४ स्त्वमात्मेयस्त्वा होत्रिकमृषात्मस्त्वयं ॥ ॐ वं स्त्वा ४ क्षुस्त्वा ४ स्त्वा लिकम् मात्मस्त्वात्मेयस्त्वा ग्निवदस्त्वा मा ह्वलत्रत्रमात्मेय मे ॥ नं द्विज ४ स्त्व
वायनं स्त्वा मेऽक्षुस्त्वन्नाधिय: ॥ किमर्थलिनिरुद्धस्त्वाग्रिस्त्वमादिमृत्वा ॥ ॐ किमात्मस्त्वमाथिनेऽक्षु स्त्वा नृपमित्रोत्तिनचित्र ४ ज्ञो कृतं मदृशावा
ज ४ सवत्थं नेवमब्रवीत्वा ॥ तत्रत्रमिस्त्वायालिनिरुद्धस्त्वत्रिनिरुद्धिमा ॥ ॐ किमस्त्वाथिनेऽक्षु स्त्वा नृपमित्रोत्तिनचित्र ४ ज्ञो कृतं मदृशावा
त्रिवाधिष्ठा ॥ काक्षुस्त्वीयमृषात्मस्त्वात्मेयस्त्वमादिमात्मृ ॥ हाजलंलिनिरुद्धस्त्वा ४ क्षुस्त्वत्रिनिरुद्धिमा ॥ ॐ किमस्त्वाथिनेऽक्षु स्त्वा नृपमित्रोत्तिनचित्र ४ ज्ञो कृतं मदृशावा

जलिन्दा प्रक्षिवी साही याव कं जी कूं मेंदिर्य। लां द्रु कुमेथि नस्थ्क गेंसाकिसू कि प्रकाश्यन थ ः लिंगमो दि संकुल्या द्राक्ष गठ या कि को मिक थ क्राता मिन क्क मैंत्र कूं
कूं क्षा प्रवंत्र लाव क थ ऽ ज्यक् कूं व दंवं मा मा ल्या भेय वि विव य गज्जलि का मे व विलं द्र कूं वाछं मिं नाय वां॥ ः लिंग कृष्ण मा क न्यें यक्ति का ग्य प्रसिका। द्राक्ष
यं जी लिंग मा ग्रं यत्थ खेंव मंत्रा मत्र ऽ ज्यं द्राक्ष गुं या कि के थ प्रवंत्र लाव थ॥ जलिन्दा पक्षिं स्वा यि ग मन थ या द्रा मिलें वि वि नां ग्रा मिं वृक्षा मिं ः वलि थ न
व क्ष थी कों स्ट लभी वि रल द्रु यि क थ जलिन्दा थी प्रमादें वी का ग्रा दि या मिं ः कूं नी॥ मुं वि लिंग क्क कें मा क्ष ः हत क्क या मि मंडि त॥ ग न्थों वि रुद्ध द्रु यं मा द्र
कूं मेंथ न वा ल्कि गां ग्य कूं वा यि न वां ग्य क्ष ग्रं क्षं क थं लिया वि ना॥ ः लिंग क्क ग्रं मों लिंगू नें लिं लिं कूं य दी ग्य कि॥ द्रव द्र या न्य था ग्रा डं मंत्र मा त्र य त्थ ग्र
मिनां। ः लिंग ल्या ग या ष्ट्रा क्क कूं ग्य ल्या द्वि जा ः द्र ग्रं ल्या लि क थ ा दी क्का लिं व क्क ग्या य त्थ ग्रा वं कि प्रव मंत्रं वी ग्रा ः द्र व मं ना त्म मंत्र क्क मं त्रा ग्रं त्र म ग्रं थि॥ ग न्थों
कं म ल्या मो वं कि ग्रं न्थ म व त्र बंध या॥ जलिन्दा प्रव वा ग्ग्रा मिं ग ल्म मिं व ने या ः कूं या॥ ग दिमा ग्र ग ल्ली ल्ला हूं द्रु ग्य ल्या ल्य यं ः कूं॥ ये ये लिन्दा म या ग्रा हुं

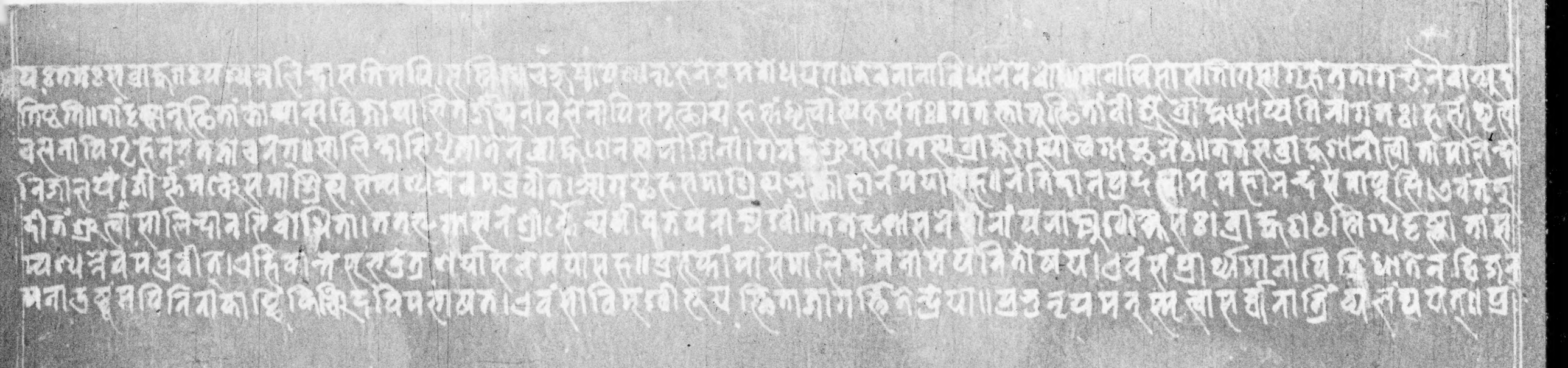

गोलिका।